International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अधिगम शैली के प्रभाव का अध्ययन

प्रतिमा तिवारी
अतिथि प्रवक्ता, सी0एम0पी0
डिग्री कालेज, इलाहाबाद

सारांशः—

वर्तमान युग में अधिगम का विशेष महत्व है, क्योंकि अधिगम पर ही पूरी शिक्षा आश्रित होती है। शिक्षा में मनोविज्ञान के प्रादुर्भाव के साथ बालक को शिक्षा का केन्द्र माना जायेगा, क्योंकि प्रत्येक बालक वैयक्तिक रूप से भिन्नता रखते हैं। प्रत्येक बालक एक—दूसरे से भिन्न होता है। उनकी इस भिन्नता के कारण उनकी सीखने की गति अभिरूचि तथा अधिगम शैली में भी भिन्नता होती है। अतः प्रत्येक बालक की अलग—अलग अध्ययन शैली होती है। चूंकि सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था बालक को ध्यान में रखकर की जाती है तो उनको किस ढंग से शिक्षा प्रदान करना है, इसे जाने बिना शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं की जा सकेगी। इसके लए प्रत्येक शिक्षक को सीखने के ढंग अर्थात अधिगम शैलियों का ज्ञान होना आवश्यक है, क्योंकि आज जो भी शिक्षा बालकों को प्रदान की जाती है, उसे देने से पूर्व पूर्ण रूप से यह सोच लिया जाता है कि बालक उसे ग्रहण करने में सफल हो सकता है।

अधिगम शैली पूर्ण रूप से बालक के अध्ययन से सम्बन्धित होती है, इसलिए यह आवश्यक है कि उसकी अधिगम शैलियों को पूर्ण रूप से ध्यान में रखते हुए शिक्षण किया जाए।

अतः यह कहा जा सकता है कि अधिगम शैलियां बालक के अधिगम को बहुत अधिक प्रभावित करती है, इसलिए इनकी जानकारी आवश्यक है। प्रस्तुत लघुशोध अध्ययन में यह देखने का प्रयास किया गया है कि अधिगम शैली का का शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है। लघुशोध में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अधिगम के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। लघुशोध में 100 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लेकर प्रदत्तों का संकलन किया गया है। क्रान्तिक अनुपात (टी अनुपात) और पियर्सन प्रोडक्ट मोमेण्ट सह सम्बन्ध गुणांक का प्रयोग किया गया है।

प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण के पश्चात् प्राप्त परिणाम के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि अधिगम शैली एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इससे यह ज्ञात होता है कि शिक्षक तथा छात्र द्वारा अधिगम शैलियों पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है। यदि शिक्षक तथा छात्र द्वारा अधिगम शैलियों की ओर यदि ध्यान दिया जाये तो छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति को बढ़ाया जा सकता है।

मूल शब्दः—

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

शैक्षिक उपलब्धि, आकृत्यात्मक अधिगम शैली, क्रियात्मक अधिगम शैली तथा शाब्दिक अधिगम शैली।

प्रस्तावनाः—

मानव के सर्वोन्मुखी विकास का सर्वोत्तम साधन शिक्षा है। वास्तव में वही शिक्षा, शिक्षा है जो जीवन का निर्माण कर सके, क्योंकि यदि शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी जीवन सुगम नहीं बनता तो शिक्षा की गुणात्मकता के आगे प्रश्न चिन्ह लग जाता है। शिक्षण प्रक्रिया में बालक तथा शिक्षक के मध्य अन्तःक्रिया होती है। कक्षा का प्रत्येक बालक एक दूसरे से भिन्न होता है। बाल मनोवैज्ञानिक वैयक्तिक विशेषता के आधार पर ही यह निश्चित करता है कि शैक्षिक कार्यक्रम में उपयुक्त एवं प्रभावी क्या है?

आधुनिक युग में शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार के अनुसार सम्पूर्ण शिक्षा की व्यवस्था बालक की रूचि, रूझान तथा योग्यतानुसार की जानी चाहिए, जिससे बालक का सर्वांगीण विकास हो सके।

बालक के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य की दृष्टि से ही शिक्षक विभिन्न प्रकार की शिक्षण विधियों का प्रयोग करते हुए शिक्षण कार्य सम्पादित करता है, जिससे विभिन्न प्रकार की अभिक्षमता व योग्यता वाले विद्यार्थी अपनी अधिगम शैलियों के अनुरूप ज्ञान प्राप्त कर सकें।

प्रत्येक बालक की अलग—अलग अधिगम शैली होती है, प्रत्येक बालक दूसरे से भिन्न तरीके से सीखता है, इसलिए उत्तम शिक्षण हेतु शिक्षक को बालक की अधिगम शैलियों का ज्ञान होना आवश्यक है। जब कक्षा में शिक्षण कार्य छात्रों की वैयक्तिक भिन्नता व अधिगम शैली को ध्यान में रखकर किया जाता है। तब छात्र अधिगम हेतु अधिक अभिप्रेरित होते हैं तथा उनका अधिगम भी प्रभावपूर्ण होता है। छात्रों द्वारा प्रयोग की जाने वाली अधिगम शैली कौन सी है? उनसे छात्रों के अधिगम पर क्या प्रभाव पड़ता है? छात्रों द्वारा प्रयोग की जाने वाली अधिगम शैली का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है? आदि से सम्बन्धित प्रत्येक छात्रों की जानकारी आवश्यक है। इन प्रश्नों को ध्यान में रखकर कई शोध किये गये तथा उनसे भिन्न—भिन्न परिणामों की प्राप्ति हुई। छात्रों की अधिगम शैली से पता चलता है कि बालक किस प्रकार की अधिगम शैली छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव डालती है?

गैलावे (1976) ने कहा था कि, शिक्षक का शिक्षण कार्य विशेषकर कमजोर छात्र के लिए प्रभावी होना चाहिए, क्योंकि यह साधारण तथा सत्य है कि प्रायः अप्रभावी शिक्षण से कम अधिगम होता है। प्रभावी शिक्षण उन छात्रों के अधिगम के लिए अप्रभावी होता है, जो अधिगम नहीं करना चाहते हैं। इसीलिए छात्रों की रूचि एवं वैयक्तिक भिन्नता को ध्यान में रखकर सीखने की परिस्थितियों का निर्माण किया जाना चाहिए। परम्परागत कक्षा शिक्षण के स्थान पर आधुनिक एवं क्रियात्मक शिक्षण को छात्रों की आवश्यकता के अनुरूप अधिगम शैली के माध्यम से छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

सिंगल एवं कुप (1974) के अनुसार, ''अधिगम शैली व्यक्ति के व्यक्तित्व के ज्ञानात्मक विमाओं को प्रदर्शित करता है।'' क्रो एण्ड क्रो के अनुसार, ''अधिगम शैली को एक नीति या यथाक्रम मानसिक व्यवहार के रूप में परिभाषित किया जा सकता

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

है, जो किसी व्यक्ति द्वारा अधिगम हेतु स्वाभाविक रूप से अवरूद्ध किया जा सके, विशेष रूप से शैक्षिक अधिगम के लिए जान–बूझकर किया गया व्यवहार जो उसकी या उसकी सामर्थ्य पर टिका है।'' स्मेक (1962) अधिगम शैली ''अधिगम कार्य के विशेष मांग के बावजूद सीखने वाले के नीति के संदर्भ में एक प्रवृत्ति है।''

प्रस्तुत लघुशोध में तीन प्रकार की अधिगम शैलियों का प्रयोग किया गया है:–

1. **क्रियात्मक अधिगम शैली:–**
   - क. क्रियात्मक पुनर्स्मणात्मक अधिगम शैली
   - ख. क्रियात्मक निर्माणात्मक अधिगम शैली
2. **आकृत्यात्मक अधिगम शैली:–**
   - क. आकृत्यात्मक पुनर्स्मणात्मक अधिगम शैली
   - ख. आकृत्यात्मक निर्माणात्मक अधिगम शैली
3. **शाब्दिक:–**
   - क. शाब्दिक पुनर्स्मणात्मक अधिगम शैली
   - ख. शाब्दिक निर्माणात्मक अधिगम शैली

क्रियात्मक अधिगम शैली के अन्तर्गत 'क्रियात्मक पुनर्स्मणात्मक तथा 'क्रियात्मक निर्माणात्मक' सम्मिलित है। पुनर्स्मणात्मक के अन्तर्गत सुनकर, बोलकर, पढ़कर, लिखकर स्मरण करना आदि से सम्बन्धित कथन सम्मिलित हैं। निर्माणात्मक के अन्तर्गत स्वयं बनाना, तुलना करना आदि आते हैं। आकृत्यात्मक के अन्तर्गत 'आकृत्यात्मक पुनर्स्मणात्मक' तथा 'आकृत्यात्मक निर्माणात्मक' दो विमाएं हैं। आकृत्यात्मक पुनर्स्मणात्मक में आकृत को देखकर, स्मरण करना तथा निर्माणात्मक में दो आकृति को देखकर तुलना करना व उनके समरूपी चित्र बनाना आदि सम्मिलित है। शाब्दिक में दो विमाएं– 'शाब्दिक पुनर्स्मणात्मक' तथा शाब्दिक निर्माणात्मक प्रथम विमा के अन्तर्गत सबसे उपयुक्त को ढूंढ़ना, फ्लो चार्ट; बार–बार दोहराना, चरणबद्ध करना, समानताएं व अन्तर बताना सम्मिलित है। द्वितीय विमा में सम्बन्धित करना, तुलना, विचार–विमर्श संगठन, निष्कर्ष, विश्लेषण व गणना करना आदि सम्मिलित है।

लघुशोध के उद्देश्य:–

1. माध्यमिक स्तर पर अधिक और कम क्रियात्मक अधिगम शैली का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अधिक और कम आक्रित्यात्मक अधिगम शैली का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर अधिक और कम शाब्दिक अधिगम शैली का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की क्रियात्मक अधिगम शैली तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
5. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शाब्दिक अधिगम शैली तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

लघुशोध की परिकल्पना:–

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

1. माध्यमिक स्तर पर अधिक और कम क्रियात्मक अधिगम शैली का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर अधिक और कम आक्रित्यात्मक अधिगम शैली का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर पर अधिक और कम शाब्दिक अधिगम शैली का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की क्रियात्मक अधिगम शैली तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
5. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आकृत्यातक अधिगम शैली तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।
6. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शाब्दिक अधिगम शैली तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

लघु शोध अध्ययन के चार प्रस्तुत लघु शोध में अधिगम शैली स्वतंत्र चर तथा छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि आश्रित चर है।

लघु शोध की विधिः–

प्रस्तुत लघु शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

लघु शोध में जनसंख्या एवं न्यादर्शः–

इलाहाबाद परिक्षेत्र में संचालित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा–9 के छात्रों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है। जनसंख्या से 100 छात्रों का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया है।

लघु शोध हेतु उपकरणः–

लघु शोध हेतु प्रो0 के0एस0मिश्रा (इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद) द्वारा निर्मित अधिगम शैली अनुसूची (नेशनल साइकोलाजिकल कार्पोरेशन आगरा) का हिन्दी वर्जन प्रयोग में लायी गयी है।

लघु शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीः–

क्रान्तिक अनुपात (टी–अनुपात) एवं पियर्सन प्रोडक्ट मोमेण्ट सहसम्बन्ध गुणांक सांख्यिकी का प्रयोग किया जाता है।

लघु शोध से प्राप्त आंकड़ों का सारणीयनः–

तालिका–1

क्रम संख्या	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' टेस्ट
1	अधिक क्रियात्मक अधिगम शैली का प्रयोग करने वाले	22	341.64	20.946	1.412
1.1	कम क्रियात्मक अधिगम शैली का प्रयोग करने वाले	13	352.08	21.461	
2	अधिक आकृयात्मक अधिगम शैली का	16	339.06	13.224	1.090

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

	प्रयोग करने वाले				
2.1	कम आकृयात्मक अधिगम शैली का प्रयोग करने वाले	14	332.43	19.856	
3	अधिक शाब्दिक अधिगम शैली का प्रयोग करने वाले	18	346.22	19.705	.489
3.1	कम शाब्दिक अधिगम शैली का प्रयोग करने वाले	14	349.93	23.127	

तालिका–2
अधिगम शैली एवं शैक्षिक उपलब्धि में सह सम्बन्ध

क्रम सं0	समूह	न्यादर्श संख्या	सह सम्बन्ध गुणांक	सार्थकता
1	क्रियात्मक अधिगम शैली का प्रयोग करने वाले	100	0.126	सार्थक नहीं
2	आकृयात्मक अधिगम शैली का प्रयोग करने वाले	100	0.11	सार्थक नहीं
3	शाब्दिक अधिगम शैली का प्रयोग करने वाले	100	0.039	सार्थक नहीं

लघु शोध का निष्कर्षः–

1. माध्यमिक स्तर पर अधिक और कम क्रियात्मक अधिगम शैली का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर अधिक और कम आक्रित्यात्मक अधिगम शैली का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर पर अधिक और कम शाब्दिक अधिगम शैली का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की क्रियात्मक अधिगम शैली तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
5. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आकृत्यातक अधिगम शैली तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।
6. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शाब्दिक अधिगम शैली तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

शैक्षिक निहितार्थः–

अध्ययन से प्राप्त विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि अधिगम शैली तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सह सम्बन्ध नहीं है। इससे यह ज्ञात होता है कि शिक्षक तथा छात्र द्वारा अधिगम शैलियों की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है। यदि शिक्षक तथा छात्र द्वारा अधिगम शैलियों की ओर ध्यान दिया जाए तो छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति को बढ़ाया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- एनड्यूस, आर0एच0 (1990), द डेवलपमेण्ट ऑफ ए लर्निंग सआईलस प्रोग्राम इन रूलो सासियोएकोनोइमक, अण्डर एचीविंग नार्थ केरोलीना एलिमेण्टरी स्कूल, जर्नरल ऑफ रीडिंग, राइटिंग एण्ड लर्नि डिसवबीलीटिस इंटरनेशनल, 6, 307–314, जनरल।
- केनो, जे0 (1990), द रिलेशनशिप बिटविन लर्निंग स्टाईलस, एकेडेमिक मेजर एण्ड रोकेडर्मिक परफोरमेन्स ऑफ कालेज स्टूडेण्ट्स जनरल ऑफ एग्रीकल्चर एजूकेशन, 40, 30–37
- डायज, डी0पी0 एण्ड कार्टनल, आर0बी0 (1999), स्टूडेण्टस लर्निंग स्टाइंलस इन टू क्लासेजः ऑन लाइन डिस्टेन्स लर्निंग एण्ड इनविलेलेण्ट ऑन कैम्पस, कालेज टीचिंग, 47 (4), 130–135.
- डन, आर0, ग्रीग्स, एस0ए0जे0 गॉरमन, बी एण्ड बीसले, एम0 (1995), ए मेटा एनालिटिक वेलिडेशन ऑफ द इन एण्ड मॉडल ऑफ लर्निंग स्टाईल प्रोफेशन्स, जनरल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, 88, 353–361.
- फेल्डर, आर0एम0 एण्ड स्प्यूरलिन, जे0 (2005), एप्लीकेशन्स, रिलाईबिलिटी एण्ड वेलिडिटी ऑफ द इनडेक्स ऑफ लर्निंग स्टाईल्स, इण्टरनेशनल, जनरल ऑफ लर्निंग स्टाईल्स, इण्टरनेशनल जनरल ऑफ इंजीनियरिंग एजूकेशन्स, 21 (1), 103–112.
- फ्रेण्डली, एम0 (2001), बिसुलुबाइजिंग केटेगरीकल डेटा, एस0ए0एस0 इन्स्टीट्यूट्, केरी, एनसी, यू0एस0ए0।
- क्लावास, ए (1994), इन ग्रीनसबोरो, नार्थ केरोलिनाः लर्निंग स्टाईल प्रोग्राम बूरटस एचीवमेण्ट एण्ड टेस्ट स्कोर्स, द क्लीयरिंग हाउस, 67, 149–151.
- पार्क, सी0सी0 (2000), लर्निंग स्टाईल प्रीफरेंसेस ऑफ साउथ ईस्ट एशियन स्टूडेण्ट्स अरबन, एजूकेशन, 35, 245–268
- चाल्स, गैलवे (1976), अधिगम एवं शिक्षण, मनोविज्ञान, न्यूयार्क मैक ग्राहिल बुक कम्पनी, 1976.
- एकसिस, सुमस्की (1968), अवराल सुमस्की के अधिगम शैली में वैयक्तिक अन्तर, न्यूजर्सी प्रीन्टाइस हॉल

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

- डेविड, चाल्स, मैक एलियन (1979), सेकेण्डरी स्तर पर एवं शिक्षक के अधिगम शैली के बीच सम्बन्ध, यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ डेकोटा, बी0ए0 आइन्स।
- डॉन, ई, हेमचैक (1979), शिक्षण अधिगम एवं अभिवृत्ति मनोविज्ञान, बोस्टन, एलिन और बैकन पब्लिशिंग कं0, 1979.
- गुप्ता, एस0पी0 (2010), शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
- पाठक, पी0डी0 (2011), शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
- मिश्र, करूणा शंकर (2013), शिक्षा मनोविज्ञान के नए क्षितिज, सर्वोदय नगर, अल्लापुर, इलाहाबाद, अनुभव पब्लिशिंग हाउस।